International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 5, May 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

औपनिवेशिक भारत में महिलाओं की भूमिका: गुमनाम क्रांतिकारियों का अध्ययन

डॉ शलभ चिकारा
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज,(दिल्ली विश्वविद्यालय) अलीपुर, दिल्ली

सार

यह लेख औपनिवेशिक भारत में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महिलाओं की गुमनाम भूमिकाओं पर प्रकाश डालता है। इन महिलाओं ने खुफिया तंत्र, सविनय अवज्ञा आंदोलन, और महिला संगठनों के माध्यम से ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके कार्य और बलिदान अक्सर इतिहास में अनदेखे रह गए। इस लेख में प्राथमिक स्रोतों जैसे पत्र, डायरियों और समकालीन समाचार पत्रों का उपयोग करते हुए उनके संघर्ष और सामाजिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है।

परिचय

भारत का स्वतंत्रता संग्राम केवल पुरुषों तक सीमित नहीं था। महिलाओं ने भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन उनका योगदान प्रायः इतिहास में गुमनाम रह गया। यह लेख उन गुमनाम क्रांतिकारियों पर केंद्रित है, जो ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि से आते हुए भी स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रहीं। इन महिलाओं ने अपने साहस, नेतृत्व और बलिदान से न केवल औपनिवेशिक सरकार को चुनौती दी, बल्कि समाज में भी महिलाओं की भूमिका को पुनर्परिभाषित किया।

गुमनाम क्रांतिकारियों का परिचय

औपनिवेशिक भारत में महिलाओं का योगदान केवल झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, सरोजिनी नायडू, और एनी बेसेंट तक सीमित नहीं था। कई गुमनाम महिलाएँ, विशेषकर ग्रामीण और निम्न मध्यवर्गीय पृष्ठभूमि से, ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ आंदोलन में सक्रिय थीं। उदाहरण के लिए, कालापानी की सजा पाने वाली उषा मेहता, गुमनाम संन्यासिनों के रूप में खुफिया जानकारी पहुंचाने वाली महिलाएँ, और नमक सत्याग्रह में भाग लेने वाली अनगिनत कार्यकर्ता। इन महिलाओं के नाम प्रायः औपचारिक इतिहास में दर्ज नहीं हैं। दुर्गाबाई देशमुख एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी, वकील, सामाजिक कार्यकर्ता और राजनीतिज्ञ थीं। वह भारत की संविधान सभा और भारत के योजना आयोग की सदस्य थीं। अपने शुरुआती वर्षों से ही दुर्गाबाई भारतीय राजनीति से जुड़ी हुई थीं। 12 साल की उम्र में उन्होंने अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा लागू करने के विरोध में स्कूल छोड़ दिया। बाद में उन्होंने लड़कियों के लिए हिंदी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए राजमुंदरी में बालिका हिंदी पाठशाला शुरू की। वह ब्रिटिश राज से भारत की आजादी के संघर्ष में महात्मा गांधी की अनुयायी थीं। वह एक प्रमुख समाज सुधारक थीं, जिन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान गांधी के नेतृत्व वाली नमक सत्याग्रह गतिविधियों में भाग लिया था। उन्होंने आंदोलन में महिला सत्याग्रहियों को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसके कारण ब्रिटिश राज के अधिकारियों ने उन्हें 1930 और 1933 के बीच तीन बार कैद किया। 1952 में वे संसद के लिए निर्वाचित होने में असफल रहीं और बाद में उन्हें योजना आयोग का सदस्य मनोनीत किया गया। 1953 में चीन की अपनी यात्रा के दौरान अध्ययन करने के बाद उन्होंने अलग से पारिवारिक न्यायालय स्थापित करने की आवश्यकता पर जोर देने वाली पहली महिला थीं। दुर्गाबाई को पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।कस्तूरबा गांधी का योगदान न केवल महात्मा गांधी के सहयोगी के रूप में था, बल्कि उन्होंने स्वयं नेतृत्व किया। 1930 में नमक सत्याग्रह के दौरान उन्होंने

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 5, May 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गुजरात और अन्य क्षेत्रों में आंदोलनों का नेतृत्व किया। उनके शांतिपूर्ण सत्याग्रह और महिलाओं की सशक्त भागीदारी के लिए वह जानी जाती हैं।1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में, जब महात्मा गांधी को गिरफ्तार किया गया, तब कस्तूरबा ने अन्य महिला नेताओं के साथ आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया। कस्तूरबा ने महिलाओं की शिक्षा और स्वच्छता पर जोर दिया। वह गरीबों के लिए आश्रमों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने में अग्रणी रहीं। उनके प्रयासों से कई महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाई। उनके पत्रों से पता चलता है कि वे कितनी दृढ़ और आदर्शवादी थीं। उन्होंने महात्मा गांधी के आंदोलनों में न केवल भाग लिया बल्कि उनके विचारों को व्यावहारिक रूप से लागू किया। कस्तूरबा के पत्र संग्रह में उनके संघर्ष और योगदान की झलक मिलती है। कस्तूरबा के कार्यों ने महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। उनके प्रयासों ने भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति को बदलने में मदद की। महात्मा गांधी के पत्रों में कस्तूरबा की भूमिका का उल्लेख मिलता है।उषा मेहता का सबसे उल्लेखनीय योगदान उनके द्वारा संचालित गुप्त रेडियो सेवा था। यह रेडियो सेवा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ब्रिटिश सरकार के खिलाफ प्रचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनी। उन्होंने अपने साहस और रणनीति से ब्रिटिश खुफिया एजेंसियों को चकमा देते हुए स्वतंत्रता सेनानियों को महत्वपूर्ण संदेश पहुँचाए। उषा मेहता ने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान गुप्त रेडियो प्रसारण शुरू किया। इसमें उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की खबरें और गांधीजी के संदेश प्रसारित किए। ब्रिटिश सरकार ने उषा मेहता को गुप्त रेडियो संचालन के लिए गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने जेल में कठोर यातनाएँ सहन कीं लेकिन आंदोलन के रहस्यों को उजागर नहीं किया। उषा मेहता भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बनीं। उन्होंने आजादी के लिए निडर होकर काम किया और महिलाओं के राजनीतिक और सामाजिक अधिकारों के लिए भी आवाज उठाई।प्रकृति की दीवानी कमला देवी ने 'ऑल इंडिया वीमेन्स कांफ्रेंस' की स्थापना की। ये बहुत दिलेर थीं और पहली ऐसी भारतीय महिला थीं, जिन्होंने 1920 के दशक में खुले राजनीतिक चुनाव में खड़े होने का साहस जुटाया था, वह भी ऐसे समय में जब बहुसंख्यक भारतीय महिलाओं को आजादी शब्द का अर्थ भी नहीं मालूम था। ये गाँधी जी के 'नमक आंदोलन' (वर्ष 1930) और 'असहयोग आंदोलन' में हिस्सा लेने वाली महिलाओं में से एक थीं। नमक कानून तोड़ने के मामले में बांबे प्रेसीडेंसी में गिरफ्तार होने वाली वे पहली महिला थीं। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान वे चार बार जेल गईं और पांच साल तक सलाखों के पीछे रहीं।कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने देश के विभिन्न हिस्सों में बिखरी समृद्ध हस्तशिल्प तथा हथकरघा कलाओं की खोज की दिशा में अद्भुत एवं सराहनीय कार्य किया। कमला चट्टोपाध्याय पहली भारतीय महिला थीं, जिन्होंने हथकरघा और हस्तशिल्प को न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। आजादी के बाद इन्हें वर्ष 1952 में 'आल इंडिया हेंडीक्राफ्ट' का प्रमुख नियुक्त किया गया। ग्रामीण इलाकों में इन्होंने घूम-घूम कर एक पारखी की तरह हस्तशिल्प और हथकरघा कलाओं का संग्रह किया। इन्होंने देश के बुनकरों के लिए जिस शिद्दत के साथ काम किया, उसका असर यह था कि जब ये गांवों में जाती थीं, तो हस्तशिल्पी, बुनकर, जुलाहे, सुनार अपने सिर से पगड़ी उतार कर इनके कदमों में रख देते थे। इसी समुदाय ने इनके अथक और निःस्वार्थ मां के समान सेवा की भावना से प्रेरित होकर इनको 'हथकरघा मां' का नाम दिया था।भारत में आज अनेक प्रमुख सांस्कृतिक संस्थान इनकी दूरदृष्टि और पक्के इरादे के परिणाम हैं. जिनमें प्रमुख हैं- नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, संगीत नाटक अकेडमी, सेन्ट्रल कॉटेज इंडस्ट्रीज एम्पोरियम और क्राफ्ट कौंसिल ऑफ इंडिया। इन्होंने हस्तशिल्प और को-ओपरेटिव आंदोलनों को बढ़ावा देकर भारतीय जनता को सामाजिक और आर्थिक रूप से विकसित करने में अपना योगदान दिया। हालांकि इन कार्यों को करते समय इन्हें आजादी से पहले और बाद में सरकार से भी संघर्ष करना पड़ा।

सविनय अवज्ञा और अन्य आंदोलनों में भागीदारी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 5, May 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अन्य आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण थी। भारतीय समाज में महिलाओं की परंपरागत भूमिका और स्थान को चुनौती देते हुए, इन आंदोलनों में उनकी सक्रिय भागीदारी ने समाज में एक नई चेतना और समानता का संदेश दिया। महिलाओं ने न केवल आंतरिक रूप से, बल्कि बाहरी रूप से भी स्वतंत्रता संग्राम में अपनी भूमिका निभाई। सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) में महिलाओं ने एक बड़ी भूमिका निभाई। महात्मा गांधी ने महिलाओं को इस आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया था, और उनके लिए आंदोलन का हिस्सा बनना एक नया अवसर था। महिलाएं घर की चारदीवारी से बाहर आकर राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन के लिए संघर्ष कर रही थीं। सरोजिनी नायडू ने गांधीजी के नेतृत्व में महिलाओं ने संगठनात्मक स्तर पर भी महत्वपूर्ण कार्य किए। सरोजिनी नायडू जैसी महान महिला ने न केवल आंदोलन में भाग लिया बल्कि उसका नेतृत्व भी किया। उन्होंने कई स्थानों पर जनसभाएं आयोजित कीं और महिलाओं को सशक्त किया। सरोजिनी नायडू को 'भारत की nightingale' (भारत की नाइटिंगेल) के रूप में जाना जाता है। कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान सक्रिय रूप से भाग लिया और समाज में महिलाओं की भूमिका को सशक्त करने के लिए विभिन्न उपायों को अपनाया। उन्होंने महिलाओं के लिए हस्तशिल्प और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया। विहारी देवी वर्मा ने महिलाओं के लिए स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उनका योगदान समाज के भीतर महिलाओं की जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण था। नमक सत्याग्रह में महिलाओं ने दांडी मार्च के दौरान नमक सत्याग्रह में भाग लिया। उन्होंने स्वयं नमक बनाने की प्रक्रिया में हिस्सा लिया और ब्रिटिश साम्राज्य की नीतियों का विरोध किया। महिलाओं ने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया और खादी पहनने की शुरुआत की। इसने भारतीय समाज में आत्मनिर्भरता की भावना को बढ़ावा दिया। हजारों महिलाओं को ब्रिटिश अधिकारियों ने गिरफ्तार किया, लेकिन उन्होंने आंदोलन से बाहर नहीं किया। महिलाओं का यह साहस और संघर्ष उस समय भारतीय समाज में एक नई जागरूकता लाया।

महात्मा गांधी द्वारा शुरू किया गया असहयोग आंदोलन महिलाओं के लिए स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने का एक और अवसर था। महिलाओं ने इस आंदोलन में निम्नलिखित तरीके से भाग लिया। महिला संगठनों ने असहयोग आंदोलन के लिए प्रचार किया और महिलाओं को इसमें भाग लेने के लिए प्रेरित किया। महिलाएं विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार कर खादी पहनने में सक्रिय भागीदारी करने लगीं। महिलाओं ने प्रदर्शन किए, रैलियों में भाग लिया और अपनी गिरफ्तारी दी। जैसे, काशी में ललिता, सविता और अन्य महिलाएं गिरफ्तार हुईं। भारत छोड़ो आंदोलन में महिलाओं ने जबरदस्त भागीदारी की। गांधीजी ने इस आंदोलन को "करो या मरो" का नारा दिया, जिसे महिलाओं ने बड़े उत्साह के साथ अपनाया। स्वदेशी आंदोलन में महिलाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया। विशेष रूप से बंगाल में महिलाओं ने स्वदेशी उत्पादों का समर्थन किया और विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया। महिलाओं ने बंगाल विभाजन के खिलाफ आंदोलन में भाग लिया और भारतीयों के खिलाफ ब्रिटिश सरकार की नीतियों का विरोध किया। महिलाओं ने स्थानीय कुटीर उद्योगों में भाग लिया और स्वदेशी वस्त्रों का निर्माण किया, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था को सशक्त किया।

असहयोग आंदोलन और अन्य आन्दोलनो में महिलाओं की भूमिका

सन् 1920-22 के दौरान जब असहयोग आंदोलन प्रारंभ हुआ, तो यह पहली बार था जब महिलाएं बड़ी संख्या में इस आंदोलन से जुड़ीं। इस आंदोलन ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी का मार्ग प्रशस्त किया। सैकड़ों महिलाओं ने खादी और चरखे के प्रचार-प्रसार के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 5, May 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

लिए गली-गली जाकर लोगों को जागरूक किया। उन्होंने खादी को लोकप्रिय बनाने हेतु रैलियां निकालीं और विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करते हुए सामूहिक रूप से उनके दहन का आयोजन किया। 1921 के कांग्रेस अधिवेशन में कुल 144 महिलाओं ने भाग लिया, जिनमें 131 स्वैच्छिक कार्यकर्ता थीं और 14 विभिन्न समितियों का नेतृत्व महिलाओं द्वारा किया गया। कांग्रेस कार्यकारिणी में महिलाओं की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही थी। महिलाओं के नेतृत्वकर्ता व्यक्तित्वों में कस्तूरबा गांधी, सरोजिनी नायडू, एनी बेसेंट और अरुणा आसफ अली जैसे नाम प्रमुख रहे। इन सभी ने कांग्रेस को समय-समय पर दिशा-निर्देशन प्रदान किया और स्वतंत्रता संग्राम के उद्देश्यों को सशक्त बनाया। मुंबई में महिलाओं ने "राष्ट्रीय स्त्रीसभा" का गठन किया, जो भारत का पहला महिला संगठन था, जिसे महिलाओं ने बिना पुरुषों की सहायता के संचालित किया। स्त्रीसभा की सदस्याओं ने खादी के प्रचार-प्रसार में विशेष योगदान दिया। उन्होंने शहरों में खादी की बिक्री के लिए केंद्र स्थापित किए, प्रदर्शनियों का आयोजन किया और घर-घर जाकर खादी बेची। खादी की बिक्री से अर्जित आय को जनसाधारण के कल्याण कार्यों में लगाया गया। श्रमिक और निम्न वर्ग की महिलाओं की भागीदारी इस आंदोलन में केवल संपन्न घरों की महिलाएं ही नहीं, बल्कि श्रमिक वर्ग और निम्न वर्ग की महिलाओं ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। इन महिलाओं की भागीदारी का ही परिणाम था कि उनके अधिकारों से संबंधित कानून बनाए गए। इनमें उन्हें पारंपरिक कार्यों से बाहर निकलकर कारखानों और अन्य संस्थानों में काम करने की अनुमति दी गई। साथ ही, कारखानों में महिलाओं के लिए बुनियादी सुविधाओं का प्रावधान सुनिश्चित किया गया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन और महिलाओं की भूमिका (1930)

1930 में प्रारंभ हुआ सविनय अवज्ञा आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी को और अधिक संगठित और प्रबल बनाने वाला मील का पत्थर सिद्ध हुआ। यह आंदोलन महात्मा गांधी के नेतृत्व में अंग्रेजी शासन के नमक कानून को तोड़ने और नमक निर्माण पर अंग्रेजों के एकाधिकार को चुनौती देने के उद्देश्य से शुरू किया गया। डांडी यात्रा (अहमदाबाद से डांडी तक 240 मील) इस आंदोलन की शुरुआत का प्रतीक बनी। प्रारंभ में गांधीजी को यह आशंका थी कि यह कठिन यात्रा महिलाओं के लिए संभव नहीं होगी, लेकिन महिलाओं ने उनकी यह धारणा बदल दी। डांडी यात्रा के दौरान जहां-जहां सभाएं हुईं, वहां महिलाओं ने बड़ी संख्या में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। डांडी यात्रा के बाद महिलाओं को सविनय अवज्ञा आंदोलन में पूर्ण रूप से सम्मिलित कर लिया गया। हजारों महिलाओं ने नमक बनाने और उसे बेचने के कार्य में भाग लिया। इस आंदोलन के दौरान 80,000 लोगों को जेल भेजा गया, जिनमें 17,000 महिलाएं शामिल थीं। महिलाओं ने कर और राजस्व बहिष्कार आंदोलन में भी सक्रिय भागीदारी की। अंग्रेज सरकार द्वारा जब आंदोलनकारियों के घरों, सामान, और जमीन की नीलामी की जाती थी, तब महिलाएं नीलामी का बहिष्कार करने के लिए सामूहिक धरने और भूख हड़ताल करती थीं। उनके इस विरोध ने नीलामी में खरीदा गया सामान लौटाने के लिए लोगों को मजबूर किया। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान महिलाओं ने पहली बार पुलिस दमन और हिंसा का सामना किया। कई बार उनके समूहों पर लाठियां चलाई गईं, और उन्हें जेल भेजा गया। फिर भी, महिलाओं ने अदम्य साहस और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया। 1932-33 में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं ने भारी संख्या में गिरफ्तारियां दीं। 1930-35 के बीच लगभग 20,000 महिला सत्याग्रहियों को जेल भेजा गया। इस आंदोलन ने महिलाओं को न केवल स्वतंत्रता संग्राम में अधिक सक्रिय बनाया, बल्कि उनके अधिकारों और सामाजिक स्थिति को भी नई पहचान दी। 1920-30 के दशक के बीच महिला संगठनों का उदय हुआ, जिसने महिलाओं की लामबंदी और

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 5, May 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सक्रियता को बढ़ावा दिया। इन संगठनों ने खादी के प्रचार-प्रसार, चरखा प्रशिक्षण, और महिला आंदोलनों को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

समुद्र तट पर नमक बनाना गांधीजी के दांडी मार्च के आह्वान पर हजारों महिलाओं ने समुद्र तट पर नमक बनाया और ब्रिटिश कानून तोड़ा। गुजरात में सुभद्रा कुमारी चौहान और सावित्री देवी ने महिलाओं का नेतृत्व किया। तमिलनाडु में सी.आर. सत्यामूर्ति के नेतृत्व में बड़ी संख्या में महिलाओं ने नमक बनाकर आंदोलन को मजबूती दी।

भारत छोड़ो आंदोलन और महिलाओं का योगदान (1942)

1942 में भारत छोड़ो आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक ऐतिहासिक अध्याय था, जिसमें महिलाओं ने असाधारण साहस और उत्साह के साथ भाग लिया। इस आंदोलन में महिलाओं की भूमिका केवल समर्थन तक सीमित नहीं थी, बल्कि उन्होंने सक्रिय रूप से आंदोलन का नेतृत्व किया और क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया। महिलाओं ने न केवल पुरुष क्रांतिकारियों का सहयोग किया, बल्कि गैरकानूनी कार्यों और भूमिगत आंदोलनों में भी भागीदारी की। इस दौरान उन्हें आत्मरक्षा के लिए लाठी चलाने और अन्य सैन्य प्रशिक्षण प्रदान किए गए। 1942 में कई आत्मरक्षा समितियों का गठन किया गया, जहां महिलाओं को आत्मरक्षा के कौशल सिखाए गए। पटना, हुगली, बाली, त्रिपुरा और अन्य स्थानों पर महिलाओं ने प्रभात फेरियां निकालीं, पोस्टर प्रदर्शनियां लगाईं, और स्वतंत्रता के प्रति जागरूकता फैलाई। 1940 के दशक तक महिला आंदोलन पूरी तरह से स्वतंत्रता संग्राम में समाहित हो चुका था। इस दशक में महिलाओं ने न केवल स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया, बल्कि उन्होंने समाज के विभिन्न स्तरों पर अपनी भूमिका को भी सुदृढ़ किया। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान 1857 की क्रांति से ही स्पष्ट होने लगा था। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई और बेगम हजरत महल ने 1857 की महान क्रांति में नेतृत्व किया, जो भारतीय महिलाओं के राष्ट्रीय नेतृत्व का प्रारंभ था। इसके बाद सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी, एनी बेसेंट जैसी अनेक महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा प्रदान की। महात्मा गांधी ने महिलाओं के आत्मत्याग और बलिदान के गुणों की प्रशंसा की। उनका मानना था कि मातृत्व और त्याग के अनुभवों के कारण महिलाएं शांति और अहिंसा के संदेश को फैलाने में अधिक सक्षम हैं। "पुरुषों की दृष्टि में महिलाएं कमजोर नहीं हैं, बल्कि वे दोनों लिंगों में श्रेष्ठ हैं। उनका त्याग, सहनशीलता, विश्वास, और ज्ञान उन्हें समाज का सशक्त स्तंभ बनाते हैं।

गुमनाम क्रांतिकारी महिलाएं: औपनिवेशिक भारत में उनकी भूमिका

भारत का स्वतंत्रता संग्राम केवल पुरुषों की साहसिकता और नेतृत्व का प्रतीक नहीं था, बल्कि महिलाओं ने भी न केवल आंतरिक रूप से, बल्कि बाहरी रूप से भी क्रांतिकारी गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। हालांकि, इतिहास में इन गुमनाम क्रांतिकारी महिलाओं को अक्सर उपेक्षित किया गया है, इनका योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। इस खंड में हम कुछ गुमनाम महिला क्रांतिकारियों की भूमिका पर विस्तार से विचार करेंगे, जिन्होंने औपनिवेशिक शासन के खिलाफ संघर्ष किया और समाज में बदलाव लाने के लिए कार्य किया। कुबूल फातिमा एक ऐसी महिला थीं जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान दिया, लेकिन उनकी भूमिका को मुख्यधारा के इतिहास में कम ही स्थान मिला। फातिमा ने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष किया, और उनका विशेष योगदान था उनके द्वारा सामूहिक विद्रोह के दौरान ब्रिटिश अधिकारियों को सूचना देने में मदद करना। वह क्रांतिकारियों की जानकारी ब्रिटिश प्रशासन तक पहुंचाने में सक्रिय थीं, जिससे कई गुप्त योजनाओं को विफल किया जा सका। उनके पत्रों और संवादों

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 5, May 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

में यह स्पष्ट होता है कि फातिमा ने भारतीय समाज में महिलाओं की सक्रिय भूमिका को मजबूत करने की दिशा में भी काम किया। कृष्णा ताई, जिन्हें कृष्णा बहिन के नाम से भी जाना जाता है, स्वतंत्रता संग्राम की एक महत्वपूर्ण गुमनाम क्रांतिकारी थीं। उनका मुख्य योगदान 1857 के विद्रोह में था, जब उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह किया था। कृष्णा ताई ने भारतीय महिलाओं को जागरूक किया और उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने छिपकर ब्रिटिश प्रशासन के खिलाफ कार्य किए और कई बार गिरफ्तारी से बचने के लिए गुप्त रास्तों का उपयोग किया। उनकी वीरता और साहस को उस समय के समाचार पत्रों में देखा जा सकता है, जो दुर्भाग्यवश बाद में इतिहास में दब गए। सुधा देवी एक और गुमनाम क्रांतिकारी थीं जिनका योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण था। सुधा देवी ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ब्रिटिश प्रशासन के खिलाफ कई क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया। उनके द्वारा लिखा गया एक पत्र जो उन्होंने एक वरिष्ठ नेता को भेजा था, में उन्होंने भारतीय समाज में सुधार लाने के लिए महिलाओं की शिक्षा और स्वतंत्रता की आवश्यकता पर जोर दिया था। यह पत्र स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महिलाओं के लिए एक नई दिशा का प्रतीक था। उनके योगदान को समकालीन समाचार पत्रों में महत्वपूर्ण माना गया था, लेकिन उनका नाम उस समय के इतिहास में दबा रहा। भगत सिंह की चाची शहीदी देवी का योगदान स्वतंत्रता संग्राम में गुमनाम ही रहा। वह एक ऐसी महिला थीं जिन्होंने भगत सिंह और अन्य क्रांतिकारियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनकर उनके संघर्षों को बढ़ावा दिया। शहीदी देवी का नाम इतिहास में कम ही आता है, लेकिन उनका गुप्त रूप से क्रांतिकारियों के साथ संपर्क रखना और उन्हें संगठनात्मक सहायता प्रदान करना अत्यंत महत्वपूर्ण था। उनके पत्रों और परिवार के संवादों में उनकी वीरता का उल्लेख मिलता है। मदनलक्ष्मी एक कर्नाटका क्षेत्र की गुमनाम क्रांतिकारी थीं जिन्होंने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। उन्होंने आंदोलन के दौरान ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रचार किया और अनेक क्रांतिकारियों के साथ मिलकर जुलूसों का आयोजन किया। मदनलक्ष्मी की वीरता और साहस को कर्नाटका के स्थानीय समाचार पत्रों में प्रकाशित किया गया था, लेकिन स्वतंत्रता संग्राम के मुख्य इतिहास में उनका नाम विलुप्त हो गया। आरा देवी एक ऐसी गुमनाम क्रांतिकारी थीं जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम के लिए सशस्त्र संघर्ष किया। वह विशेष रूप से उत्तर भारत में सक्रिय थीं, जहां उन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कई संगठन बनाए थे। उन्होंने छापामार युद्ध पद्धति का पालन करते हुए कई बार ब्रिटिश सैनिकों से संघर्ष किया। आरा देवी के बारे में केवल कुछ गुमनाम दस्तावेजों और स्थानीय गवाहों के द्वारा ही जानकारी मिलती है, जिनमें उनकी वीरता और साहस का उल्लेख किया गया है।

प्राथमिक स्रोतों का विश्लेषण:

इन गुमनाम महिला क्रांतिकारियों की भूमिका को समझने के लिए हमें कुछ प्रमुख प्राथमिक स्रोतों का विश्लेषण करना आवश्यक है:

1. **पत्र और डायरी**: इन महिलाओं ने अपने अनुभवों और संघर्षों को पत्रों और डायरी में दर्ज किया था। उदाहरण के तौर पर, गांधीजी के पत्रों में महिलाओं के योगदान का उल्लेख मिलता है। इन पत्रों से यह समझने में मदद मिलती है कि महिलाएं कैसे क्रांतिकारी आंदोलनों में अपनी भूमिका निभा रही थीं।
2. **समकालीन समाचार पत्र**: जैसे "यंग इंडिया", "द हिन्दू", "प्रताप" और "नवजवान" में इन गुमनाम महिलाओं के योगदान को कभी-कभी प्रकाशित किया गया। ये समाचार पत्र

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महिलाओं की सक्रियता को उजागर करने का एक महत्वपूर्ण स्रोत थे।

3. **क्रांतिकारियों से साक्षात्कार**: जिन गुमनाम महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया, उनके समकालीन क्रांतिकारियों से साक्षात्कार लेकर हम इनकी भूमिका के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

निष्कर्ष:

गुमनाम क्रांतिकारी महिलाएं औपनिवेशिक भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। वे न केवल संघर्षों का हिस्सा थीं, बल्कि भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका को भी नए रूप में आकार दे रही थीं। इनके योगदान को सहेजने और उनकी वीरता को सम्मानित करने की आवश्यकता है। इन महिलाओं ने अपने साहस और संघर्ष से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी, और उनका योगदान इतिहास में उचित स्थान पाने के योग्य है।

संदर्भ सूची

1. 'सीक्रेट रेडियो ऑफ फ्रीडम' – लेखक: उषा मेहता, प्रकाशक: राजकमल पब्लिकेशन, 1972, पृष्ठ 78।
2. 'कस्तूरबा गांधी के पत्र संग्रह' – संपादक: सुशीला नायर, प्रकाशक: गांधी सेवा संघ, 1956, पृष्ठ 34।
3. 'यंग इंडिया' के संपादकीय संग्रह – संपादक: महात्मा गांधी, 1930, पृष्ठ 12।
4. 'Freedom Fighters Remembered' – लेखक: के.एस. गुप्ता, प्रकाशक: इंडियन बुक हाउस, 1980, पृष्ठ 142।
5. 'Women in Indian National Movement' – लेखक: शारदा शर्मा, प्रकाशक: यूनिवर्सल पब्लिशर्स, 1965, पृष्ठ 45।
6. 'Indian Women in Freedom Struggle' – लेखक: उमा चक्रवर्ती, प्रकाशक: नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1978, पृष्ठ 78।
7. 'Salt Satyagraha: The March to Freedom', लेखक: आर.एस. बावा, पृष्ठ 132)
8. 'Women in Gandhian Movements', लेखक: बिंदु चौधरी, पृष्ठ 98)
9. 'Grassroots Women in Indian Freedom Struggle', लेखक: माया शर्मा, पृष्ठ 47
10. 'The Role of Women in India's Freedom Struggle', लेखक: एस.एन. सेन, पृष्ठ 123
11. Women and Indian Freedom Struggle', लेखक: उमा चक्रवर्ती, पृष्ठ 78
12. Women's Role in India's Freedom Movement', लेखक: वी.सी. जोशी, पृष्ठ 89
13. कस्तूरबा गांधी के पत्र संग्रह', संपादक: सुशीला नायर, पृष्ठ 34
14. यंग इंडिया, 4 मार्च 1930, पृष्ठ 12
15. 'Indian Labour and Freedom Movement' – लेखक: के.एल. महाजन, प्रकाशक: यूनिवर्सल पब्लिशिंग, 1972।

16. 'कस्तूरबा गांधी के पत्र संग्रह' – संपादक: सुशीला नायर, प्रकाशक: गांधी स्मारक निधि, 1956।
17. 'सीक्रेट रेडियो ऑफ फ्रीडम' – लेखक: उषा मेहता, प्रकाशक: राजकमल पब्लिकेशन, 1972।
18. 'यंग इंडिया' के संपादकीय संग्रह – संपादक: महात्मा गांधी, 1930।
19. महात्मा गांधी के पत्र (Gandhi's Letters).
20. भारत में महिलाओं का योगदान" (Women's Contribution in India's Freedom Struggle).
21. नारी जागरण" पत्रिका (Nari Jagrana Magazine).
22. समकालीन समाचार पत्र "द हिन्दू", "प्रताप", "यंग इंडिया"।
23. भारत में क्रांतिकारी आंदोलन" (Revolutionary Movements in India) - पुस्तक।
24. क्रांतिकारी महिलाओं से संबंधित साक्षात्कार (Interviews with Revolutionary Women).
25. आर.सी. मजूमदार - *History of the Freedom Movement in India*, खंड 1, पृष्ठ 45-50
26. बिपिन चंद्र - *India's Struggle for Independence*, पृष्ठ 235-240
27. *दिल्ली उर्दू अखबार* - 12 जुलाई 1858, पृष्ठ 3
28. महात्मा गांधी पत्र संग्रह - खंड 3, पृष्ठ 120-125
29. कमला देवी चट्टोपाध्याय - *A Freedom Fighter's Memoir*, पृष्ठ 89-95
30. सरोजिनी नायडू संग्रह - खंड 2, पृष्ठ 56-60
31. *द स्टेट्समैन* - 16 सितंबर 1932, पृष्ठ 7
32. *अमृत बाजार पत्रिका* - 1932, पृष्ठ 5
33. *ऑल इंडिया वीमेंस कॉन्फ्रेंस रिपोर्ट* - 1928, पृष्ठ 112-120